डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम का कविरूप

डॉ0 मंजरी खन्ना
एसोशियेट प्रोफेसर, हिन्दी
नारी शिक्षा निकेतन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कैसरबाग, लखनऊ

शोध–सार

भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित, मिसाइल मैन के नाम से प्रख्यात भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति अबुल पाकिर जैनुल आबेदीन अब्दुल कलाम समस्त भारतवासियों के लिये एक आदर्श हैं। अपूर्व मेधावान, महान वैज्ञानिक, जननायक, उत्कृष्ट शिक्षक, प्रबुद्ध लेखक और चिंतनषील विचारक कलाम साहब विकसित भारत *का स्वप्न देखने वाले एक कर्मठ स्वप्नद्रष्टा थे। एक वैज्ञानिक और एक राष्ट्रभक्त के रूप में तो सभी उनसे परिचित हैं परन्तु उनके व्यक्तित्व के एक अन्य पहलू से प्रायः सभी अनभिज्ञ है और वह है उनका कविरूप। कलाम साहब अत्यन्त संवेदनशील और सहृदय कवि भी थे। विभिन्न अवसरों पर उनके द्वारा तमिल और अंग्रेजी भाषा में लिखी गई 49 कविताओं का हिन्दी अनुवाद 'जीवन–वृक्ष' नाम से प्रकाषित है। ये मात्र कविताएँ ही नहीं है वरन् कलाम साहब के निष्छल और पवित्र मन का या यों कहिए कि उनके व्यक्तित्व का आइना है। भले ही शिल्पगत दृष्टि से इन कविताओं का विषेष महत्व न हो परन्तु उसमें जो संदेश निहित हैं वो अनमोल हैं।*

मुख्य शब्द – *कलाम , राष्ट्रपति , विकसित भारत , वैज्ञानिक, जीवन–वृक्ष, स्वप्न।*

हिमालय के समान दिव्य और विराट् व्यक्तित्व के स्वामी अबुल पाकिर जैनुल आबेदीन अब्दुल कलाम एक युग पुरूष थे, महामानव थे। भारत रत्न, पद्म विभूषण तथा पद्म भूषण की उपाधि से विभूषित देश के ग्यारहवें राष्ट्रपति डा0 कलाम के आकस्मिक महाप्रयाण पर धर्म, जाति, आयु वर्ग की समस्त सीमाओं को तोड़ते हुये जिस तरह सम्पूर्ण भारत वर्ष की जनता ने आँसू बहाये थे वह घटना उनके व्यक्तित्व की महानता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। 'सादा जीवन उच्च विचार' की उक्ति को चरितार्थ करने वाले डॉ0 कलाम एक अंतरिक्ष वैज्ञानिक एक मिसाइल मैन रक्षा प्रोद्योगिकी वेत्ता एक उत्कृष्ट शिक्षक ही नहीं थे वरन् विकसित भारत का स्वप्न देखने वाले एक कर्मठ स्वप्न दृष्टा भी थे। उनका मानना था कि जब हम स्वप्न देखेगें तभी तो उसे पूरा करने के लिए कर्मशील बनेगें । इसी लिए कलाम साहब अपनी पुस्तक 'तेजस्वी मन' के आरम्भ में सभी को जागती आँखों से स्वप्न देखने के लिए प्रेरित करते हुये कहते है –

स्वप्न, स्वप्न और स्वप्न
स्वप्न विचारों में परिवर्तित होते हैं
और विचार कार्यो में परिणत होते हैं।

स्वयं कलाम साहब का भी एक ही स्वप्न था, एक ही लक्ष्य था–भारतवर्ष को विकसित राष्ट्र बनाना। भारत के राष्ट्रपति पद की षपथ लेने के उपरान्त 25 जुलाई को राष्ट्र के नाम अपने संदेश में उन्होंने कहा था–"जब मैं अपने देश की यात्रा करता हूँ जब मैं अपने देष के तटों के चारों ओर तीन समुद्रों की लहरों की आवाज सुनता हूँ, जब मैं शक्तिमान हिमालय से आने वाली वायु की मृदुलता महसूस करता हूँ, जब मैं उत्तरी पूर्व तथा हमारे द्वीपों की जैव विविधता को देखता हूँ और जब मैं पश्चिमी रेगिस्तान से आने वाली गरमी को महसूस करता हूँ, मैं युवाओं की आवाज सुनता हूँ– मैं भारत का गीत कब गा सकता हूँ? यदि युवाओं को भारत का गान गाना है तो भारत को एक विकसित देश बनाना होगा, जो गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी से मुक्त हो और आर्थिक समृद्धि,

राष्ट्रीय सुरक्षा और आतंरिक सद्भावना से उत्फुल्ल हो।" इतना कहने के साथ ही डा0 कलाम 23 मार्च सन् 2002 में लिखी गई कविता song of youth युवाओं का गान गाने लगे थे। जो इस प्रकार है –

मैं और मेरा देश भारत
अपने राष्ट्र के लिये प्रौद्योगिकी, ज्ञान और प्रेम से सुसज्जित,
एक युवा भारतीय के रूप में,
मैं महसूस करता हूँ कि छोटा लक्ष्य अपराध है।
मैं उस महान लक्ष्य के लिये कार्य करूँगा और पसीना बहाऊँगा।
भारत का एक विकसित राष्ट्र के रूप में निर्माण हो ,
जो आर्थिक सुदृढता और जीवन मूल्यों के सिद्धांत से परिपूर्ण हो।

यह था डा0 कलाम का दृढ आत्मविश्वास और यह पूर्णतः सच है कि उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के महान लक्ष्य के लिए समर्पित कर दिया। अपने दायित्वों के क्रम में विनाशकारी शस्त्र विकसित कराने के कार्य करने बावजूद डा0 कलाम एक शान्तिप्रिय व्यक्ति थे। उनका मानना था कि दूसरे देश हमारा सम्मान तभी करेंगे जब हम स्वयं शक्तिशाली होगें। उनका यह भी मानना था कि विश्व के सभी देष तभी सुखी, सम्पन्न और समृद्ध होंगे जब चतुर्दिक शान्ति का वातावरण होगा और इस सम्बन्ध में डा0 कलाम को अपने देशवासियों की क्षमता पर पूर्ण विश्वास था उन्हें विष्वास था कि एक दिन भारत अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेगा। संदेष नामक कविता में उन्होंने अपने इसी आत्मविश्वास को अभिव्यक्ति दी है –

अपने काम से प्रेम करो
अपने सपनों पर विश्वास रखों
धरती पर नहीं ऐसी कोई शक्ति
जो तोड़ सके तुम्हारे सपनों को।

कम ही लोग जानते है कि डा0 कलाम वैज्ञानिक उत्कृष्टता और काव्यमय प्रतिभा के अद्भुत संगम थे। एक कुषल वैज्ञानिक होने के साथ–साथ एक सफल रचनाकार भी थे। गहन चिन्तन तथा विचाराभिरव्यक्ति की तीव्रलालसा ने उन्हे लेखक बना दिया था उन्होंने Wings of fire , My journey Ignited minds , Developments in Fluid mechanics and space technology , the luminous sparks, India 2020, A vision for the new millennium , Inspiring thoughts turnings points आदि अनेक ज्ञानवर्धक , प्रेरणादायक पुस्तकें लिखी। राष्ट्रपति कार्यकाल के दौरान राष्ट्रपति भवन में उनके मेज पर तमिल संतकवि तिरूवल्लुवर की कॉसे की प्रतिमा रखी रहती थी। जो इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण थी कि साहित्य में उनकी गहरी अभिरूचि थी। पुस्तकों से उन्हें विषेष लगाव था विशेषकर तिरूवल्लुवर लिखित 'तिरूक्कुरल' उन्हें अत्यधिक प्रिय थी। लगभग दो हजार वर्ष पुरानी इस पुस्तक में नीतिशास्त्र एवं राजनीतिक शास्त्र से लेकर अर्थशास्त्र तक सभी विषयों पर ज्ञानपरक लगभग एक हजार तीन सौ दोहे संग्रहित हैं। डा0 कलाम अवसरानुकूल उपयुक्त दोहे का उद्धरण देने से चूकते नहीं थे।

डा0 कलाम अत्यन्त सरल, निष्छल और उदार प्रकृति के व्यक्ति थे। उन्होंने कवि हृदय पाया था । वो अत्यन्त भावुक और संवेदनशील व्यक्ति थे। The life Tree उनके द्वारा अंग्रेजी और तमिल भाषा में विभिन्न विषयों पर लिखी गई 49 कविताओं का एक संग्रह है जिसे मानव गुप्ता ने समकालीन चित्रों से सजाया है। विभिन्न अवसरों पर लिखी गई इन छोटी–छोटी कविताओं का अनुवाद प्रो0 अरूण कुमार तिवारी तथा राकेश शर्मा द्वारा किया गया है। यह पुस्तक इस दृष्टि से विशेष महत्व रखती है कि यह कलाम साहब के व्यक्तित्व के एक अनदेखे पहलू : कवि रूप का साक्षात्कार कराती है।

कवि प्रायः प्रकृति प्रेमी होते हैं। उनमें प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण व पर्यालोचन की अद्भुत क्षमता होती है। भौतिक सुख सुविधाओं की चकाचौंध में मनुष्य प्रकृति की नैंसर्गिक सुन्दरता से दूर होता जा रहा है। ऊँची–ऊँची पथरीली इमारतों में रहने से उसका हृदय भी पत्थर का होता जा रहा है। डा0 कलाम का मानना था कि मनुष्य की वास्तविक खुशी प्रकृति के ममतामय

सानिध्य में ही है। Garden Smiles शीर्षक कविता में उन्होंने लिखा है कि किस तरह पुष्पों से सुवासित उपवन, भौरों की मधुर गुंजार और प्रकृति की बसंतकालीन अनूठी प्राकृतिक सुषमा हमारी अन्तर्ात्मा को खुशियो से भर देती है –

गुलाब सुंदर गुलाब
खुशबू से महकते सुंदरता से भरपूर
मनोरम दृश्य मुझसे समाया
मेरे तन व आत्मा को उसने खुशियों से महकाया।

इसी तरह Earth Shining in glory नामक कविता में सूर्य के प्रखर प्रकाश के सम्बन्ध में कलाम साहब कहते है कि ये मात्र रोशनी का स्रोत नहीं है वरन् ज्ञान का सेवा का, शान्ति का संदेश वाहक भी है–

देखो धरती मै कैसी वैभवपूर्ण चमक
कहॉ से आई यह दमक
एक मधुर और कोमल जवाब आया
यह नही साधारण रोशनी
यह है ज्ञान का प्रकाश
यह है सेवा का प्रकाश
यह है शान्ति।

'Rocks walls', 'I am the Indian Ocean.' 'Our Missions water' आदि कविताओं में भी प्रकृति के माध्यम से मानवता का संदेश दिया है। Our mission is water शीर्षक कविता इस दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय नदी नील के माध्यम से संदेष दिया है कि जब सफेद नील और नीली नील मिलकर 11 देशों की जलापूर्ति कर सकती है तो हम सबके दिल मिलकर सम्पूर्ण विश्व में मानवता की स्थापना क्यों नहीं कर सकते–

नीली और श्वेत नील तुम्हें मिला है एक लक्ष्य
ईश्वर इच्छा से करो प्रसारित यह सुंन्दर संदेश
जब हो सकता है नदियों का संगम
हे! मानव तो क्यों नहीं होता हृदयों का मिलन
और क्यों नहीं रह पाते तुम उल्लसित प्रसन्न ।

महाकवि पंत के समान ही कलाम साहब भी मानव को ईश्वर की सुन्दरतम् रचना मानते थे। उनका मानना था कि प्रेम ही मानवता का मूल है। इसलिये The life tree नामक कविता में उन्होंने मनुष्यों को ईष्वर की सर्वोत्तम रचना बताते हुये उसे प्रेम का महत् संदेश दिया है–

प्रेम है अविरल
यही है इंसानियत का ध्येय
जीवन वृक्ष समझाएगा तुम्हें
तुम सीखोगे और जानोगें
तुम्हीं मेरी श्रेष्ठतम रचना हो, जान लो यह ।

डा0 कलाम ने विवेकानन्द, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस और गॉधी जी के समान देश के युवाओं की नींद से जगाने का आह्वान किया। Rakhi day is Righteous day और I am the Indian Ocean शीर्षक कविताओं द्वारा कलाम साहब ने युवा मन को उद्वेलित कर उनमें स्फूर्ति और उत्साह, जोश और उमंग तथा उर्जा का संचार करने का प्रयास किया। उन्हें देष को समृद्धशाली और खुशहाल बनाने के लिये अपने स्वेद बिंदु बहाने की सीख दी–

प्रबुद्ध युवाओं अब तुम्हें करना है श्रम
अपने लोगों को सुखी समृद्ध बनाने को
क्योकि धरती के इस भाग की
तुम हो सबसे बडी आशा।

कुछ ऐसी कविताएं भी है जिनके द्वारा कलाम साहब ने देश के राजनीतिज्ञों को नेताओं को उनके दायित्वों का स्मरण कराया है। 'यथा राजा तथा प्रजा' कहावत के प्रकाश में उन्होनें सासदों को सत्य के, न्याय के, नैतिकता के मार्ग पर चलने की सीख दी है। 'हम कहॉ है' में वो स्पष्ट कहते है –

हे सांसदों, भारत माँ के कर्णधारों,
हमें प्रकाश में ले चलो, जीवन हमारा सँवारों
x x x x x x x x x x
महान विचार विकसित करो
उठो कर्मपथ पर बढो
सदाचार हो आपका पथप्रदर्शक
ईश्वर के आर्शीवाद से, सभी की खुशहाली हो ।

अन्तिम पंक्ति पर ध्यान दें। कलाम साहब ने प्रत्येक कविता में में इसी तरह ईश्वर के अनुग्रह की कामना की है।

डा0 कलाम धार्मिक थे परन्तु उनकी आस्था किसी भी संकीर्णता के दायरे से परे थी।

वो साम्प्रदायिकता के जातिवाद के, धर्मान्धता के घोर विरोधी थे। उनका मानना था कि धर्म भले ही अलग अलग हो परन्तु ईश्वर एक है। धर्म तो मात्र एक माध्यम है जो हमें ईश्वर से जोड़ता है। एक बार एक छात्र द्वारा पूछे गये प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा था, "धर्म सुंदर द्वीपों का एक उद्भुत समूह है। जब धर्म अध्यात्म का रूप लेने लगते है तो हमें इन सबमें एकात्म के दर्शन होने लगते है।"[11] इसीलिए उनका कहना था कि धर्म चाहे कोई भी हो ईश्वर को प्रेम से ही पाया जा सकता है। 'प्रकृति' शीर्षक कविता में वो कहते हैं कि ईश्वर सर्वव्याप्त है उसे खोजना व्यर्थ है। यदि मन में प्रेम होगा तो हमें प्रत्येक स्थान पर ईश्वर ही दिखायी देगा। प्रेम ईश्वर का दूसरा रूप है–

तू क्यों तलाशता है परमपिता को
प्रकृति है उसका आवास, पवित्रता उसका निवास
जीवन है उसका आशीष
प्रकृति से प्यार करो, उसके प्राणियों का उद्धार करो
तब तुम देखेगे सर्वत्र दिव्यता का प्रकाश।

भगवद्गीता और कुरान दोनों ही धर्मग्रन्थों के प्रति कलाम साहब की गहरी आस्था थी। बचपन में डा0 कलाम ने अपने पिता और रामेश्वरम् मंदिर के पंडित जी को कुरान और गीता की चर्चा करते हुए बहुत बार सुना था। तभी से उनके मन में ऐसे धार्मिक संस्कार रोपित हो गये थे। एक बार हैदराबाद में जब साम्प्रदायिक दंगों में बड़ी संख्या में लोग मारे गये तो कलाम साहब ने 'गॉड' शीर्षक कविता में धर्म के नाम पर घृणा और हिंसा फैलाने वाले लोगों के प्रति अपना गहरा रोष अभिव्यक्त करते हुये सभी को प्यार फैलाने का संदेश दिया –

जब पीड़ितों ने ईश्वर को खोजना चाहा
और एक रोशनी के लिए आवाज दी।
रोशनी ने उनसे किनारा कर लिया
रोशनी ने कहा–नहीं मैं तुम्हारा नहीं हूँ
तुमने मेरे आनन्द को मार डाला है
मैने तुम्हें प्यार फैलाने के लिए भेजा
इसकी बजाय तुमने घृणा फैलाई।

धर्म की भूमिका पर अपने विचार व्यक्ति करते हुये उन्होंने एक स्थान पर कहा था कि–"धर्म को चाहिए कि वह शनैः शनैः अध्यात्म का रूप लेता चला जाय तथा राष्ट्र के विकास हेतु लोगों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करें।"[14] सच है हम सभी एकता के सूत्र में बंधकर ही लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। 'ऊँचे सपनों' नाम कविता में कलाम साहब कहते हैं –

देखो कर सकते है हम भी कर सकते है
जब हम संगठित होकर समर्पित होगें अपने लक्ष्य के लिए
जब आसमान में हमारी सीमा हो जाएगी असीम
पा लेंगे हम हर मंजिल
न रोक सकेगी कोई सीमा असीम।

कलाम साहब संगठन में, एक जुटता में विश्वास रखते थे । 'मै नहीं हम' शीर्षक कविता के माध्यम से उन्होंने भारतवासियों को आपसी कटुता, भेदभाव, स्वार्थ का परित्याग कर एक साथ मिलकर आत्मानुशासन, नेकी और ईमानदारी द्वारा बुराई रूपी खर पतवार को उखाड़ फेकने का संदेश दिया है –

किसका काम है खरपतवार उखाड़ना ,
आत्मत्याग और बहादुरी से अपयश का सामना करना
फैली हुई बुराईयों को चुपके से पोंछ देना
मैं क्यों नहीं ? मैं क्यो? यदि मैं नहीं तो कौन?
बेहतर होगा , मैं नहीं, हम सब हो।

भारत को एक उन्नतिशील, सर्वशक्तिमान राष्ट्र बनाने के लिये आस्थावान् कलाम साहब ईश्वर के सम्मुख प्रणत होकर विनती करते हैं –

ओ सर्वशक्तिमान ज्ञान का दीप जला दो
ओ सर्वशक्तिमान मेरे सभी लोगों को कार्य करने का वरदान दो
सभी नेता देश को मजबूती दे सकें, ऐसा करो
मेरे देष को शांन्ति तथा समृद्धि से भर दो
मेरे सभी धार्मिक नेताओं को ऐसी शक्ति दो
कि वो हमारे अरबों लोगों को एक कर सके।
हमारे युवाओं को विकसित भारत में रहने का वरदान दो।

डा0 कलाम की ये कविताएं अपनी सहजता और सरलता से हमारे अन्तर्मन को कहीं गहरे स्पर्श करती है। blossom, happiness , kindness ,prosperous, light, peace, united, God, dream, righteous, soul, lord, almighty. जैसे शब्दों का बार बार प्रयेाग डा0 कलाम की आत्मिक निर्मलता और निश्छलता को, उनकी कर्मठता को, उनकी अध्यात्मवादी, आशावादी, मानवतावादी, विचारधारा को, ज्ञान की अद्म्य पिपासा को ही वाणी देता है। भले ही शिल्पगत दृष्टि से इन कविताओं का विशेष महत्व न हो परन्तु इनमें निहित विचार, भाव और संदेश निश्चय ही अनमोल हैं।

जिसने भी कलाम सहाब को देखा सदा मुस्कराते हुये देखा। जो भी उनके सम्पर्क में आया उनके व्यक्तित्व की तेजोमय आभा के सम्मुख नतमस्तक हो गया। उनके स्नेहिल व्यवहार और प्रेरणादायी संदेशों ने युवाओं और बच्चों को नई उर्जा, नये उत्साह, और नव जीवनी शक्ति से भर दिया। कलाम साहब महान संत थे। वो केवल देना ही देना जानते थे तभी तो राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद पर रहने के उपरान्त भी मृत्यु के समय उनका व्यक्तिगत अर्थकोश खाली का खाली ही रहा। "उनके पास संचित पूँजी के रूप में कुछ जोड़ी कपड़े, एक वीणा और कुछ किताबें मात्र थी । उनके द्वारा लिखी गई किताबों से प्राप्त होने वाली रॉयलटी का एक–एक रूपया वे मिशनरींज ऑफ चैरिटी को दान कर दिया करते थे।"

10 जून 2009 को उत्तरी आयरलैण्ड की क्वींस यूनिवर्सिटी बेल्फास्ट में होने वाले कवि सम्म्मेलन में उन्होंने 'मेरे आँगन के विशाल वृक्ष' नामक कविता पढ़ी थी । यह कविता वास्तव में उनके व्यक्तित्व का ही आइना है –

अब पूछो! पूछो कलाम, क्या है मेरा मिशन
मेरे जीवन के सौ वर्षो का मिशन
मेरा मिशन , मुझे अपना सर्वस्य देने में आता है मजा,
मैं फूल, मधु बाँटता हूँ, सैकड़ों पक्षियों का आश्रयस्थल हूँ
मैं देता हूँ , केवल देता हूँ
बस देता जाता हूँ,
तभी तो प्रसन्न और जवां रहता हूँ।

सन्दर्भ सूची

1. क्या हैं कलाम?, आर0 रामानाथन, पृ0 सं0 50
2. क्या हैं कलाम?, आर0 रामानाथन, पृ0 सं0 211
3. जीवन–वृक्ष, ए0पी0जे0अब्दुल कलाम, (अनुवाद प्रो0 अरूण कुमार तिवारी और राकेश शर्मा पृ0 सं0 11
4. जीवन–वृक्ष, ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम, पृ0 सं0 46
5. जीवन–वृक्ष, ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम, पृ0 सं0 107
6. जीवन–वृक्ष, ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम, पृ0 सं0 104
7. जीवन–वृक्ष, ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम, पृ0 सं0 110
8. जीवन–वृक्ष, ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम ,पृ0 सं0 19
9. जीवन–वृक्ष, ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम ,पृ0 सं0 102
10. जीवन–वृक्ष, ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम ,पृ0 सं0 108
11. हम होगें कामयाब, ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम, पृ0 सं0 119
12. जीवन–वृक्ष, ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम, पृ0 स0 33
13. क्या हैं कलाम?, आर0 रामानाथन, पृ0 स0 67
14. हम होगें कामयाब, ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम, पृ0 सं0 118
15. जीवन–वृक्ष, ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम, पृ0 सं0 91
16. जीवन–वृक्ष, ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम, पृ0 सं0 50
17. क्या हैं कलाम?, आर0 रामानाथन, पृ0 स0 93
18. कलाम को सलाम, भूमिका डा0 विसारिया
19. जीवन–वृक्ष, ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम, पृ0 सं0 140